

The India Post

Daily News

International symposium on membrane biology from Dec 3

National Agri-Food Biotechnology Institute (NABI), along with its co-partners Institute of Nano Science and Technology (INST), Punjab State Council of Science and Technology (PSCST) and Indian Institute of Science Education and Research (IISER) are organising a three-day Hargobind Khorana Memorial International Symposium on 'Genes, Genomes and Membrane Biology' from December 3 to 5 on the NABI campus in Sector 81, Mohali.

The symposium is being organised in association with Massachusetts Institute of Technology (MIT) and Colorado State University, USA.

The symposium is dedicated to late Prof Hargobind Khorana, who won the Nobel Prize in Physiology or Medicine in 1968 for his pioneering work on the interpretation of the genetic code and its function in protein synthesis.

Over 30 foreign scientists across the world are going to participate and deliver scientific lectures in the symposium, which is expected to see a participation of more than 300 scientists and researchers of the country.

Dr TR Sharma, Director-NABI, said: "The symposium of such a magnitude is the first-of-its-kind in the tricity. It will provide a platform for young students and scientists to interact with distinguished scientists from all across the globe."— TNS

International symposium on membrane biology from Dec 3

MOHALI, NOVEMBER 29

National Agri-Food Biotechnology Institute (NABI), along with its co-partners Institute of Nano Science and Technology (INST), Punjab State Council of Science and Technology (PSC-ST) and Indian Institute of Science Education and Research (IISER) are organising a three-day Hargobind Khorana Memorial International Symposium on 'Genes, Genomes and Membrane Biology' from Decem-

ber 3 to 5 on the NABI campus in Sector 81, Mohali.

The symposium is being organised in association with Massachusetts Institute of Technology (MIT) and Colorado State University, USA.

The symposium is dedicated to late Prof Hargobind Khorana, who won the Nobel Prize in Physiology or Medicine in 1968 for his pioneering work on the interpretation of the genetic code and its function in protein synthesis.

Over 30 foreign scientists

across the world are going to participate and deliver scientific lectures in the symposium, which is expected to see a participation of more than 300 scientists and researchers of the country.

Dr TR Sharma, Director-NABI, said: "The symposium of such a magnitude is the first-of-its-kind in the tricity. It will provide a platform for young students and scientists to interact with distinguished scientists from all across the globe."—TNS

REMEMBERING PROF HAR GOBIND KHORANA

300 participate in symposium



A symposium in the memory of Prof Har Gobind Khorana under way at National Agri-food Biotechnology Institute in Mohali on Sunday. TRIBUNE PHOTO: VICKY GHARU

TRIBUNE NEWS SERVICE

MOHALI, DECEMBER 3

A three-day symposium in the memory of Prof Har Gobind Khorana kicked off at National Agri-Food Biotechnology Institute (NABI) in Sector 81, here today.

The event is organised by the NABI, along with the Punjab State Council for Science and Technology, the Institute of Nano Science and Technology, the Indian Institute of Science Research and Education and NABI's USA collaborators — Uttam L RajB-

handary and Rajinder S Ranu from the Massachusetts Institute of Technology and Colorado State University, respectively. The event began with a welcome address by Dr TR Sharma, Executive Director of the NABI.

Organisers said around 300 young researchers and established scientists from across the country were participating in the symposium which would have five scientific sessions dealing with cancer biology, signal transduction, membrane biology, gene expression, nucleic acids biol-

ogy, newer features of genetic code, atomic resolution cryo-electron microscopy, glycobiology, biotechnology and a session on plant disease resistance and plant biology.

"A special session will cover the reminiscences of Prof Khorana by his close associates," said the organizers.

"Our speakers are from different countries, including the USA, Canada, Japan, South Korea, China and Belgium. Indian researchers who were associated with the Khorana lab will be attending the symposium," said an organiser.



नाबी में पहुंचे पूरे देश से युवा शोधकर्ता और वैज्ञानिक

नेशनल एग्री फूड बायोटेक्नोलॉजी में प्रो. हरगोबिंद खुराना पर हुई संगोष्ठी



सिंफोनियम का उद्घाटन करते मुख्य मेहमान और कार्यक्रम में मौजूद वक्ता। अमर उजाला

अमर उजाला ब्यूरो
मोहाली।

सेक्टर-81 स्थित नेशनल एग्री फूड बायोटेक्नोलॉजी इंस्टीट्यूट नाबी में प्रो. हरगोबिंद खुराना की याद में संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में नाबी और पंजाब स्टेट काउंसिल फॉर साइंस एंड टेक्नोलॉजी, द इंस्टीट्यूट ऑफ नैनो साइंस एंड टेक्नोलॉजी व इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस रिसर्च एंड एजुकेशन और नाबी के यूएसए के सहयोग से हुआ।

कार्यक्रम की शुरुआत में संस्थान के एग्जीक्यूटिव डॉ. टीआर शर्मा ने आए लोगों का स्वागत किया। समागम में तीन सौ के करीब युवा रिसर्च और वैज्ञानिक पूरे भारत से हिस्सा लेने के लिए आए हुए थे। इस दौरान पांच चरणों में समागम चला। कैसर बायोलॉजी, संकेत पारगमन, झिल्ली जीव विज्ञान, जीन अभिव्यक्ति, न्यूक्लिक एसिड जीव विज्ञान, आनुवंशिक कोड की नई सुविधाओं, परमाणु रिजोल्यूशन क्रायो-इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोपी, ग्लाइकोबायोलॉजी, जैव प्रौद्योगिकी और

पौधे रोग प्रतिरोध और संयंत्र जीव विज्ञान पर एक सत्र से शामिल था। वहीं, समागम में कई देशों से वक्ता पहुंचे हुए थे। इनमें यूएसए, कनाडा, जापान, साउथ कोरिया चीन, बेल्जियम शामिल थे। इसके अलावा इंडियन रिसर्च जो कि खुराना लैब से संबंधित थे। उन्होंने भी समागम में हिस्सा लिया। हरगोबिंद का जन्म पाकिस्तान में हुआ था। लाहौर में पंजाब यूनिवर्सिटी में उनकी पढ़ाई हुई थी। फिर वह अमेरिका चले गए। वहीं, 1968 में उन्हें नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

दिसंबर 5, 2017

मंगलवार

अमर उजाला

एंटी मलेरिया ड्रग से संभव है डेंगू का भी इलाज: राधाकृष्णन

एजुकेशन रिपोर्टर | चंडीगढ़

डेंगू करीब 100 देशों की समस्या है। बीमारी से ज्यादा समस्या यह है कि 75 फीसदी मरीजों को पता ही नहीं लग पाता

कि उनको डेंगू हुआ है। जो बाद में खतरनाक साबित होता है। इस बीमारी का इलाज मलेरिया की दवाओं से हो सकता है। इस जानकारी को दैनिक भास्कर के साथ साझा किया जाईटाउन यूनिवर्सिटी यूएसए से आए प्रो. पी राधाकृष्णन ने। वे मूल तौर पर तमिलनाडु के



प्रो. पी राधाकृष्णन की दवाओं से हो सकता है। इस जानकारी को दैनिक भास्कर के साथ साझा किया जाईटाउन यूनिवर्सिटी यूएसए से आए प्रो. पी राधाकृष्णन ने। वे मूल तौर पर तमिलनाडु के



मोहाली में जीन जीनोम एंड मेंब्रेन बायोलॉजी पर हो रही कॉन्फ्रेंस।

मरीज के जेनेटिक प्रोफाइल का मैप होना चाहिए

कॉन्फ्रेंस में सोमवार को डायबिटीज, डेंगू, कैंसर व न्यूरोडीजेनेरेटिव बीमारियों पर डिस्कशन हुआ। प्रोफेसर खुराना के दूसरे केसुएट स्टूडेंट प्रोफेसर राला रोशन ने ट्रिपल नेगेटिव ब्रेस्ट कैंसर के बारे में बताया। उन्होंने इसके लिए सिग्नल ड्रग थेरेपी तलाशी है। दयूमर सेल को तोड़ना एक बड़ा चैलेंज था। प्रोफेसर रोशन ने डायबिटीज की दवा के बारे में भी डेमोस्ट्रेशन दिया। उन्होंने कैंसर जीनोमिक्स एटलस पर काम करने के लिए कहा। मरीज का सही इलाज करने और कैंसर को मैनेज करने के लिए मरीज की जेनेटिक प्रोफाइल का मैप होना चाहिए। यह अप्रोच पश्चिम में तेजी पकड़ रही है।

रहने वाले हैं और डॉ. हरगोविंद खुराना के साथ पोस्ट डॉक्टरेट कर चुके हैं। वे नेशनल एग्री फूड बायो टेक्नोलॉजी इंस्टिट्यूट (नबी) में चल रही डॉ. हरगोविंद खुराना

कराई जा रही है। डॉ. राधाकृष्णन ने बताया कि उन्होंने इस बारे में वैसिक रिसर्च की है, जिसके अनुसार मच्छर के काटने से होने वाला डेंगू वायरस मलेरिया की दवा से भी कंट्रोल

किया जा सकता है। एंटी मलेरियाल कंपाउंड का इस्तेमाल अब वे पशुओं पर करना चाहते हैं। वे डेंगू की नोन टॉक्सिक वैक्सीन तैयार करने की कोशिश में हैं।

Triple-negative breast cancer discussed



Dr Jong Myoung Kim from Pukyong National University, South Korea, in Mohali.

TRIBUNE PHOTO: VICKY GHARU

TRIBUNE NEWS SERVICE

MOHALI, DECEMBER 4

Prof Marsha Rosner from the University of Chicago, who was the second graduate student of Prof Har Gobind Khorana, discussed her path-breaking work on triple-negative breast cancer (TNBC) on the second day of international symposium on 'Genes, Genomes and Membrane Biology' at National Agri-Food Biotechnology Institute (NABI) Auditorium in Sector 81,

Mohali, here today.

The event, which is being held in the memory of Nobel Laureate Prof Har Gobind Khorana, witnessed special session on cell signaling and gene regulation in a bid to tackle and find advanced remedies for cancer, diabetes, dengue and other neuro-degenerative diseases.

Earlier, in her presentation, Prof Rosner cited the heterogeneity of tumor cells as one of the prime challenge and reason behind the inefficacy of single drug therapy. Prof Rosner also demonstrated her work on a diabetes drug, Metformin, to efficiently cure cancers by tweaking the micro-environment of the tumors, especially metabolism.

Later, Prof P Radhakrishnan from Georgetown University, US, underlined the challenges and recent advancement in developing vaccine against mosquito-borne dengue virus with attenuating the RNA replication cycle.

डॉ हरगोबिंद खुराना यादगारी कॉन्फ्रेंस

नाबी में आईएनएसटी और आइजर मोहाली करा रहे हैं कॉन्फ्रेंस



इंदिरा गांधी के फोन पर डॉ. हरगोबिंद खुराना ने हिंदुस्तान को दिए थे साइंटिस्ट

उनकी पहली भारतीय स्टूडेंट और दूसरी पीएचडी कैडिडेट ने भास्कर के साथ साझा की यादें

ननु जोगिंद सिंह | मोहाली

नाबी में आईएनएसटी और आइजर मोहाली की साझा कोशिशों से डॉ. हरगोबिंद खुराना यादगारी कॉन्फ्रेंस कराई जा रही है। भारतीय मूल के पंजाबी साइंटिस्ट को नोबेल मिले 2018 में 50 साल हो जाएंगे। उसी को सेलिब्रेट करने के लिए पहली बार ये कॉन्फ्रेंस भारत में हो रही है। डिपार्टमेंट ऑफ बायोटेक्नोलॉजी और इंडो यूएस साइंस एंड टेक्नोलॉजी फोरम भी इस कॉन्फ्रेंस में पार्टनर हैं। खुराना को उनके स्टूडेंट्स गोबिंद के नाम से ही जानते हैं। कॉन्फ्रेंस में खुराना की पहली भारतीय स्टूडेंट डॉ. पारुल चक्रवर्ती और पीएचडी कैडिडेट प्रो. माशा खुराना ने भास्कर के साथ साझा की अपनी यादें।

डॉ. पारुल चक्रवर्ती - जिन्हें खुराना ने वापस इंडिया भेजा...

• इंदिरा गांधी ने उनसे कहा था कुछ साइंटिस्ट लौटाओ, तो मुझे भेजा...

ये गलतफहमी है कि उनको भारत से नाराजगी थी। तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने उनको फोन किया था कि कुछ भारतीय साइंटिस्ट्स को लौटा दें, यहाँ जरूरत है। इस पर गोबिंद ने मुझे देश लौटने को कहा। मुझे बोस इंस्टीट्यूट में नौकरी मिली। देश में इमरजेंसी के दौरान मुझे विपत्तय हुई तो गोबिंद ने ही समझाया - वहीं लैब बनाओ, तुम कर सकती हो। एक इंसान के तौर पर वह हमेशा खामोश मददगार रहे। हर शाम मुझे मेरी मेज पर खाने के लिए कुछ ना कुछ मिलता था। पता चला गोबिंद ही चुपचाप छोड़ जाते थे। भारतीय त्योहारों पर मुझे अपने घर ले जाते थे ताकि मैं परिवार को मिस ना करूं। मैं पहली भारतीय थी जिसको गोबिंद ने अपने साथ पोस्ट डॉक्टरेट की इजाजत दी। पहली बार उनके पास पहुंची तो साड़ी में थी। उन्होंने सवाल किया - इस तरह साड़ी में क्या तुम कर पाओगी। मेरी हाइट छोटी थी, दूसरे दिन इसी की परीक्षा हुई। उन्होंने ऊपर रखा सामान उठाने को कहा। मैंने सभी काम कर दिए। पोस्ट डॉक्टरेट फेलो के तौर पर उन्होंने मुझे चुना। शर्माने स्वभाव के कारण उनको मीडिया से बात करना पसंद नहीं था। नोबेल पुरस्कार के बाद जब लोग उनको इंटरव्यू करना चाह रहे थे तो उनके स्टूडेंट्स ही इंटरव्यू दे रहे थे। उन्होंने जीवन में सिर्फ एक इंटरव्यू दिया। ताऊम उनको अफसोस रहा कि हिंदुस्तान में अपनी किताबें नहीं ला सके।



प्रो. माशा - खुराना की पीएचडी स्टूडेंट रही...

• कहते थे - नोबेल के बाद सेलिब्रिटी बनो या काम पर फोकस रहो

वह 24 घंटे और सातों दिन लैब में आना पसंद करते थे। कभी हम लैट होते तो ऐसे नोट मिलते- खनिवार के 9 बजे हैं, मैं यहाँ हूँ, तुम कहाँ हो। वो खनिवार- रविवार को सबकी सीट पर डोनट्स रखते थे। सुबह देखते कि किसने कितने डोनट्स खाए ताकि पता चले कि रात में कौन जगकर काम कर रहा था। चुपचाप सभी की नोटबुकस चेक करते थे। एक्सपेरिमेंट्स किए होंगे तो नोटबुक में होंगे ही। नोबेल पुरस्कार के बाद उनके पास ट्रैवल, कॉन्फ्रेंस और इन्विटेशन का ढेर था। उन्होंने इनकार किया। कहते थे - नोबेल के बाद या तो सेलिब्रिटी बनकर बुनिया यूगो या चुपचाप काम पर ही फोकस करो। उन्होंने फोकस रहने को चुना। मेरी अब तक की रिसर्च उनकी ही देन है।



काम कर रहा था। चुपचाप सभी की नोटबुकस चेक करते थे। एक्सपेरिमेंट्स किए होंगे तो नोटबुक में होंगे ही। नोबेल पुरस्कार के बाद उनके पास ट्रैवल, कॉन्फ्रेंस और इन्विटेशन का ढेर था। उन्होंने इनकार किया। कहते थे - नोबेल के बाद या तो सेलिब्रिटी बनकर बुनिया यूगो या चुपचाप काम पर ही फोकस करो। उन्होंने फोकस रहने को चुना। मेरी अब तक की रिसर्च उनकी ही देन है।

चंडीगढ़ भास्कर

चंडीगढ़, बुधवार 06 दिसंबर, 2017

Scientists discuss need for research programmes

TRIBUNE NEWS SERVICE

MOHALI, DECEMBER 5

Scientists from India and the USA discussed promoting research exchange programmes, especially in biotechnology and genomics, for the undergraduate, post-graduate and PhD students during an international symposium, being held at National Agri-Biotechnology Institute (NABI), Mohali.

The Department of Biotechnology (DBT), India, and the Indo-US Science and Technology Forum (IUSSTF) have partnered to support the prestigious programme for students and research scholars. The programme was held in the



Prof Assem Z Ansari, a scientist at the University of Wisconsin-Madison, USA, speaks during a symposium at NABI, Mohali, on Tuesday. TRIBUNE PHOTO

memory of Nobel laureate Prof Har Gobind Khorana.

Prof Assem Z Ansari, a renowned scientist on synthetic genome at the University of Wisconsin-Madison, USA, and coordinator of several India-USA joint Khorana initiatives, said, "This year is important since it marks 50 years of Khorana winning the Nobel Prize".

He emphasised that these programmes were aimed at finding new "Khoranas" in the land of Khorana, which will be the real tribute to the late Nobel laureate. The programme will provide opportunities to Indian students to undertake research at the University of Wisconsin-Madison (UW) and 25 partner universities across the USA next year for a period of 10 weeks.

